1

स्नातकोत्तर - द्वितीय सेमेस्टर प्रश्नपत्र हिन्दी ...

अयोध्याकाण्ड 27-5-2020

03 THURSDAY JULY

JUN 14

श्री गुरुचरन सरोज रज निज मन मुकुर सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि॥

जब ते रामु ब्याहि घर आए। नित नव मंगल मोद बधाए॥
भुवन चारिदस, भूधर भारी। सुकृत मेघ बरषहिं सुख बारी॥
रिधि सिधि संपति नदीं सुहाई। उमगि अवध अंबुधि कहुँ आई॥
मनिगन पुर नर नारि सुजाती। सुचि अमोल सुंदर सब भाँती॥
कहि न जाइ कछु नगर बिभूती। जनु एतनिअ बिरंचि करतूती॥
सब बिधि सब पुर लोग सुखारी। रामचन्द मुख चंदु निहारी॥
मुदित मातु सब सखीं सहेली। फलित बिलोकि मनोरथ बेली॥
राम रूपु गुन सीलु सुभाऊ। प्रमुदित होइ देखि सुनि राऊ॥

दोहा - सब कें उर अभिलाषु अस, कहहिं मनाइ महेसु।
आप अछत जुबराज पद, रामहि देउ नरेसु॥1॥

व्याख्या:- विद्यार्थियों तुम लोगों ने कबीरदास के पदों को भी ... उसे भी देखा। उसकी संख्या भी बहुत अधिक है और उस... माथापच्ची भी अधिक है। मैं चाहता हूँ कि उसमे अधिक समय बर्बाद न करके, जल्दी से जल्दी कोर्स पूरा किया जाए। मैं क्या सबने 'रामचरित मानस' को देखा होगा जो सर्वसुलभ है और प्रत्येक हिन्दी के घर में विद्यमान है। आज मैं इसकी महत्ता को समझाते हुए इस अयोध्याकाण्ड को व्याख्यायित करने का प्रयास करूँगा।

2014

14 AUG

[illegible] को कौन है जो तुलसीदास को नहीं जानता।

[illegible] पढ़ा हो, कम पढ़ा लिखा हो, अनपढ़ हो, जिसकी भी

[illegible] प्रदान करे जो यह रामचरितमानस (रामायण) की जानकारी

[illegible] कोई न कोई दोहा, चौपाई सम्पूर्ण भारतीय की जिह्वा

पर विराजमान है। यह इस युग का महानतम ग्रंथ है।

इसमें जीवन की सभी समस्याओं का समाधान निहित

है इसीलिए इसकी पढ़ाई सर्वथा उचित है। गोस्वामी

तुलसीदास ने अपनी इस कृति में खण्डों का नाम 'काण्ड' दिया

है मैं बता दूँ विभिन्न महाकाव्यों में खण्डों को अलग-अलग

नाम से अभिहित किया। उदाहरणार्थ 'पृथ्वीराज रासो' का नाम

सुना होगा - उसमें खण्डों का नाम 'समय' रखा गया है।

जायसी का 'पद्मावत' पढ़ा। उसमें भी मानस की तरह

दोहा चौपाई का प्रयोग किया गया है पर खण्डों का नाम

'खण्ड' ही रखा है जैसे 'नागमती वियोग खण्ड'। परंतु

मानस में खण्डों का नाम 'काण्ड' रखा गया है, जैसे -

'बालकाण्ड', 'अयोध्याकाण्ड', आरण्य काण्ड, किष्किन्धाकाण्ड

आदि। हमारा अभिप्रेत 'अयोध्या काण्ड' से है। इस काण्ड

05 SATURDAY JULY

३

JUN 14

विद्वानों ने रामचरितमानस को हृदय नाम दिया है।
इसलिए क्योंकि रामावतार की जो उद्देश्य का उस
यहीं तैयार की गयी है। सम्पूर्ण घटनाक्रम को
के उद्देश्य का भी आधार यही काण्ड है। यह
आधार भूमि है जिसके ऊपर रामचरितमानस
मंदिर को खड़ा किया गया है। राम को एक मर्यादा
प्रेम के रूप में स्थापित किया गया है जिसके काम
भी अयोध्या काण्ड ही है। इस काण्ड में राम के
का वह मणिकांचन रूप दिखाया गया है जिससे सम्पू
मानस देदीप्यमान है।

इस अयोध्याकाण्ड की शुरु
गुरुवंदना से होती है। तुलसीदास इसी दोहे से हनु
चालीसा को भी प्रारम्भ करते हैं। उनका कथन है कि

06 SUNDAY

मैं गुरुचरणों को ध्यान में रखकर श्रीराम के विमल च
का वर्णन करता हूँ। उन्हीं के शब्दों में - मैं मन के दर्पण
आपने गुरु के चरणों के ध्यान में रखकर श्रीराम के चरित्र का वर्णन
20 प्रारंभ करता हूँ। यह कार्य चारों तरह के फलों को
प्रदान करनेवाला है। ये चारों फल - अर्थ, धर्म, का

और सोभा है, इस दोहा के उपरांत चौपाई का प्रारम्भ होता है जिसमें वो बताते हैं कि जब से श्रीराम जनकनंदिनी सीता से ब्याह करके अयोध्या लौटे हैं तब से अयोध्या में खुशी और आनन्द का माहौल है। कोई ऐसा दिन नहीं होता है जब कोई आनन्दोत्सव अयोध्या में नहीं मनाया जा रहा हो। नये-नये मंगलकार्य किए जा रहे हैं, तुलसीदास जी कहते हैं कि सम्पूर्ण संसार, चौदह लोक रूपी पर्वत सब के सब उनके चरित्र के पुण्य रूपी मेघ से बरसते मेघ से सरस हो रहे, खुशहाल हो रहे हैं, खुशी रूपी हरीतिमा उन पर छा गयी है। वे आगे कहते हैं कि मानो अयोध्या एक समुद्र है जिसमें सिद्धियाँ रूपी नदियाँ उमड़-उमड़ कर आ रही हैं और इस आप्लावित कर रही हैं। वे बताते हैं कि अयोध्या के निवासी भी अति श्रेष्ठ हैं, मणियों के समान हैं जो सर्वोत्तम। पवित्र, अमूल्य और सुन्दर हैं। सिर्फ लोग ही नहीं नगर और गाँव भी अत्यंत सुंदर और विकसित हो गये हैं, महानगर भी ऐश्वर्यवान हो गया है। वे कहते हैं कि अयोध्या को देखकर

ऐसा लगता कि ब्रह्मा जी ने अपनी सम्पूर्ण कारीगरी ही नगर में खर्च कर दी है, ऐसा इसलिए लग रहा है कि सारे नगर निवासी श्रीरामजी के मुख चन्द्र को देखकर आनन्दित हैं, सुखी हैं। श्री रामचन्द्र की माताएँ एक समान सुखी हैं आनंदित हैं। ऐसा इस हो रहा है कि उनके मनोरथ रूपी बेलें फलित हो गई हैं उनके समान ही श्रीरामजी के रूप, गुण, शील को (स्वभाव) देखकर पिता राजा दशरथ भी बहुत आनंदित हैं। निचोड़ रूप में सबकी इच्छा यही है तथा महादेव से रहे हैं कि सब के रहते श्री रामचन्द्र जी को युवराज के पद आसीन कर दें।

विशेषताएं इस दोहा चौपाई में अनेक स्थान अ भी अपनी छटा बिखेर रहे हैं। चरण सरोज, मन मुकुर दोनों शब्दों में रूपक अलंकार है। चौपाई की दूसरी पंक्ति में - भुवन चारि दस भूधर भारी और सुकृत मेघ में रूपक अलंकार है। मनि गन पुर नर नारि सुजाती रूपक और स्तुति अमीत में लुप्तोपमा अलंकार

कुसुमचंद्र. मनोरमा शैली में भी रूपकालंकार की छटा देखने को मिलती है। इस प्रकार अयोध्याकाण्ड के पहले चरण का अंत होता है, यह कुछ लम्बा हो गया क्योंकि इसमें परिचयात्मक भूमिका भी शामिल किया गया है। आगे से दो-दो दोहा खण्डों की व्याख्या एक दिन में की जाएगी ताकि कार्य जल्दी से आगे बढ़ सके।

—धन्यवाद

कुमार रजनीकान्त रंजन
26/8/2020